Date: / /

प्रसार शिक्षण →

प्रसार शिक्षण अत्यन्त मनोवैज्ञानिक ढंग से सम्पन्न शिक्षण है जो मानव - व्यवहार पर आधारित एवं कोन्द्रित है। सीखना एक मानसिक प्रक्रिया है जिसकी आभिव्यक्ति व्यवहार के सहारे होती है।

सीखने की क्रिया तथा प्रतिधारण - क्षमता →

सीखने की क्रिया को एक अनुभूत स्थिति या मनोदशा कहा गया है। यह व्यक्ति को मानसिक एवं शारीरिक रूप से प्रभावित करती है। सीखना - प्रक्रिया में समस्त संवेदन - शक्तियाँ तथा - दृष्टि श्रवण घ्राण, स्वाद एवं त्वक का सक्रिय रूप से भाग लेना आवश्यक है। संवेदन - शक्तियों द्वारा प्राप्त अनुभव मनुष्य के ज्ञान स्तर को बढ़ाते हैं किन्तु यह तभी सम्भव है। जब व्यक्ति की सभी ज्ञानेन्द्रियों की समागता विषय - वस्तु के प्रति समर्पित हो। सीखना - क्रिया से सम्बन्धित विभिन्न अनुसंधानों द्वारा यह तथ्य प्रमाणित हो चुका है कि व्यक्ति की समस्त ज्ञानेन्द्रियाँ इस प्रक्रिया में भाग लेती है प्रसिद्ध प्रसार शिक्षाशास्त्री डहमा ने इसका समीकरण इस प्रकार प्रस्तुत किया है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, कालिया

Date: / /

स्वाद द्वारा	1% (प्रतिशत)
स्पर्श द्वारा	$1\frac{1}{2}$%
घ्राण द्वारा	$3\frac{1}{2}$%
श्रवण द्वारा	11 %
दृष्टि द्वारा	83 %

सीखना क्रिया द्वारा ग्रहण की गई अनुभूतियों को व्यक्ति अपने अन्दर में धारण कर लेता है। इस सम्बन्ध में मॉर्गन तथा गिलिलैण्ड का विचार

"Learning is some modification in the behaviour of the organism as a result of experience (due to some sort of th training) which is retained for at least a certain period of time." मॉर्गन तथा गिलिलैण्ड ने व्यवहार में परिमार्जन की बात कही है। जिसका धारण मनुष्य कुछ समय के लिए करता है। दहामा के अनुसार सीखने वाले की प्रतिधारणा-क्षमता ~~प्रतिधा~~ (Ability to Retain) इस प्रकार होती है।

पढ़कर	10%
सुनकर	20%
देखकर	30%

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

देखकर एवं सुनकर	50%,
परस्पर वार्तालाप द्वारा	10%,
कार्य-सम्पादन करते हुए वार्तालाप द्वारा	90%,

उपर्युक्त समीकरणों द्वारा यह स्पष्ट होता है कि सीखना-प्रक्रिया में सभी ज्ञानेन्द्रियाँ भाग लेती हैं किन्तु दृष्टि का प्रभाव सर्वाधिक होता है।

औपचारिक शिक्षण तथा प्रसार शिक्षण में अन्तर →

औपचारिक शिक्षण बाल एवं युवा-केन्द्रित शिक्षण प्रणाली है। जो बालकों एवं युवाओं को भविष्य में सामाजिक एवं आर्थिक जीवन के प्रतिपालन के निमित्त सक्षम बनाती है। इसका स्वरूप निश्चित होता है; तथा समय सत पाठ्यक्रम प्रवेश एवं परीक्षा के नियम तथा कक्षोन्नति भी प्रतिबन्धित होती है। इसमें लचीलापन नहीं होता अतः शिक्षार्थियों की सुविधा-असुविधा के प्रति सतर्कता नहीं बरती जाती जो विद्यार्थी मुख्य धारा से जुड़ नहीं पाते वे कक्षोन्नति से वंचित रह जाते हैं।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

24/09/2020